NATIONAL HEALTH MISSION

RBSK

जन्मजात विकृतियों की पहचान करने में
आशा कर्मियों को सक्षम करना

प्रस्तावना

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) बाल स्वास्थ्य जांच और शीघ्र उपचार प्रदान करने संबंधी सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। कार्यक्रम का लक्ष्य बच्चों में मौजूद 30 चयनितस्वास्थ्य स्थितियों (चार दोषों अर्थात जन्म के समय दोषों, कमियों, रोगों और विकलांगता समेत विकासात्मक विलंब) का जल्दी पता लगाना और उनका उपचार करना है। जन्म के समय से 18 वर्ष की उम्र तक के सभी बच्चों को आरबीएसके के तहत शामिल किया गया है।

जन्मजात विकृतियां होने के कई कारण हैं और इनकी वजह से शिशु में शारीरिक विकृति हो जाती है। इनमें से कुछ जन्म के समय नजर आने लगती हैं। इस पुस्तिका में आप कुछ सामान्य जन्मजात विकृतियों के बारे में जानेंगे,की उनकी पहचान कैसे की जाए,व माता–पिता को क्या सलाह दी जानी चाहिए, ऐसे बच्चों को कहां रेफर किया जा सकता है तथा अन्य क्या किया सकता है।

एक आशा कर्मी के रूप में आपके पास ऐसी विकृतियों को पहचानने तथा परिवार द्वारा इस पर तुरंत कार्रवाई किए जाने में सक्षम बनाने का अवसर है। आपकी प्रमुख जिम्मेदारियों में से एक, जन्म के पहले दिन से प्रारंभिक छः सप्ताह तक नवजात शिशु के घर जा करके नवजात को घर पर परिचर्या प्रदान करना है। इस अवधि के दौरान आप जन्मजात विकृति का पता लगा सकते हैं। ऐसे बच्चों की शीघ्र पहचान करने से, परिवार को निकटतम रेफरल केंद्र से उपचार करने में मदद मिलेगी।

इस पुस्तिका में विभिन्न जन्मजात विकृतियों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया हैजिनसे आपको इन विकृतियों को पहचानने व पता लगाने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत, ऐसे बच्चों को सहायता प्रदान किए जाने की सुविधा उपलब्ध है। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की अन्य सुविधाओं में, आंगनवाड़ी केंद्रों में 6 सप्ताह से 6 वर्ष की आयु समूह वाले बच्चों तथा विद्यालय में 6–18 वर्ष की आयु समूह के बच्चों के लिए समर्पित मोबाइल स्वास्थ्य दल द्वारा जांच करना शामिल है।

जन्म के समय विकृति

1. "जन्म के समय विकृति" क्या है?

- "जन्म विकृति" एक स्वास्थ्य समस्या या शारीरिक परिवर्तन है, जो जन्म के समय किसी शिशु में मौजूद रहती है।
- जन्मजात विकृति कम भी हो सकती है, जहां शिशु किसी भी अन्य शिशु की भांति दिखता है और कार्य करता है अथवा यह गंभीर भी हो सकता है।
- कुछ जन्मजात विकृतियों, एक अंग को प्रभावित करती हैं जबकि दूसरी शरीर के कई अंगों को प्रभावित कर सकती हैं।
- कुछेक जन्मजात विकृतियों की आसानी से पहचान की जा सकती है और कुछ अन्य को चिकित्सक या चिकित्सा जांच की मदद के बिना नहीं पहचाना जा सकता है।

2. "जन्म के समय की विकृतियों" की शीघ्र पहचान करना क्यों महत्वपूर्ण है?

- जन्मजात विकृतियों की शीघ्र पहचान और उनका उपचार करने से बच्चे को लगभग सामान्य जीवन जीने में मदद मिल सकती है।
- कई शारीरिक विकृतियों को, उनकी शीघ्र पहचान करने पर शल्यक्रिया के द्वारा ठीक किया जा सकता है, जैसे होठ या तालु का कटा होना (क्लेफ्ट लिप या पैलट और कुछेक हृदय संबंधी विकृतियां)।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- गर्भवती महिलाओं को पत्तेदार हरी सब्जियों, कलेजी और दालें जैसे फोलिक एसिड वाले खाद्य पदार्थ लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- विशेषकर जन्मजात विकृतियों के इतिहास वाले परिवारों के मामले में, नजदीकी रिश्तेदारों में विवाहकरने से बचें।
- गर्भावस्था के दौरान कम से कम तीन बार नियमित प्रसव–पूर्व जांच कराएं।
- एएनएम या चिकित्सा अधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट औषधियों को छोड़कर अन्य गैर–जरूरी औषधियों को लेने में कमी करना।
- गर्भावस्था में विकिरण (एक्स–रे) के संपर्क में आने से तथा धूम्रपानध्मद्यपान से बचें।
- माता को तनाव देने तथा घरेलू हिंसासे बचाव के द्वारा घर में परिवार के सदस्यों द्वारा एक सकारात्मक माहौल बनाए रखा जाए।
- गर्भावस्था के दौरान संक्रमण से बचने के लिए सुरक्षित तरीकेसे यौन संबंध बनाकर और व्यक्तिगत स्वच्छता रखकर अच्छी साफ–सफाई बनाए रखना।

जन्म के समय विकृति की पहचान करना

स्नायु ट्यूब (न्यूरल ट्यूब) विकृति

स्नायु ट्यूब विकृति (एनटीडी) मेरूदंड, कपाल और मस्तिष्क की गंभीर जन्मजात विकृतियां हैं

लक्षणः

- पीठ या सिर के पीछे सूजन हो।
- सूजन से कोई रिसाव हो रहा हो।
- पैरों को हिलाने–ढुलाने में परेशानी हो रही हो।
- मल–द्वार से निरंतर मल या निकास हो रहा हो।

ऐसा कोई लक्षण पाए जाने परः

- सूजन को ढकने के लिए साफ और सूखे कपड़े का प्रयोग करें
- माता को स्तनपान जारी रखने की सलाह दें
- जिला अस्पताल को रेफर करें

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- स्नायु ट्यूब विकृति से बचाव के लिए गर्भवती महिला को पत्तेदार हरी सब्जियां, दालें जैसी फोलिक एसिड से भरपूर खाद्य पदार्थ खाने की सलाह दें।
- गर्भावस्था के दौरान किसी भी सूरत में किसी भी समय धूम्रपान/मद्यपान का सेवन न करें।

डाउन सिन्ड्रोम

डाउन सिन्ड्रोम वह विकार है जिसके कारण बौनापन, चौड़े एवं चपटे चेहरे और मानसिक मन्दता जैसी शारीरिक विकृतियाँ पैदा होती हैं।

लक्षणः

- शिशु "फ्लॉपी" की तरह दिखाई देता है अर्थात् उसके सिर, शरीर एवं हाथ ढीले होते हैं।
- सिर उसी आयु समूह के सामान्य बच्चों के सिर से छोटा होता है या विकृत आकार का होता है।
- चेहरा चपटा होता हैरू
  - क. ऊपर की ओर तिरछी आँखें (देश के कुछ हिस्सों में यह सामान्य हो सकता है)।
  - ख. आँखों का भीतरी कोना नुकीला होने के बजाय गोल होता है।
  - ग. छोटे एवं विकृत कान
  - घ. छोटा मुँह
  - ड़. चपटी नाक
- हथेली के आर–पार एक गहरी रेखा
- पाँचवीं उंगली में दो के बजाय एक टेढ़ा जोड़
- चौड़े, छोटे हाथ जिनमें उंगलियाँ छोटी हों
- पैर के पहले और दूसरे अंगूठे के बीच अधिक अन्तराल (सैन्डल गैप)
- जन्म के समय औसत से कम वजन एवं लंबाई
- मुँह के आकार की तुलना में जीभ का बड़ा दिखना।

यदि आप ये लक्षण देखते हैं, तो जिला अस्पताल/नजदीकी रेफरल अस्पताल ले जाएं।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- जन्म के प्रथम तीन माह के भीतर शीघ्र उपचार होने से डाउन सिन्ड्रोम वाले बच्चे लगभग स्वतंत्र जीवन जी सकते हैं।
- बच्चे की आँख, दाँत, कान एवं थायराइड की नियमित जाँच करानी चाहिए।
- बच्चे की गर्दन एवं रीढ़ की विशेष जाँच (गर्दन को अचानक हिलाने से परहेज करें)।
- यदि माता–पिता किसी स्पीच थेरेपिस्ट की सलाह लें तो बच्चे की बोली में सुधार हो सकता है।

फटे होंठ और तालु

फटे होंठः
शारीरिक विभाजन या ऊपरी होंठ का दो भागों में विभाजन।

फटे तालुः
विभाजित या मुँह के ऊपरी भाग में दरार

दोनों फटे होंठ और तालुः

लक्षणः

- नाक के जरिए खाद्य एवं तरल पदार्थ का बाहर निकलना
- चूसने में कठिनाई
- आवाज में नकियाना

यदि आप ऐसा कोई लक्षण देखते हैंः

- तो जिला अस्पताल/नजदीकी रेफरल अस्पताल से संपर्क करें।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- फटे होंठ और तालु को समय पर सर्जरी करके ठीक किया जा सकता है।
- जन्म के 2–3 माह तक फटे होंठ को जोड़ने हेतु सर्जरी की जाती है।
- फटे तालु की सर्जरी 12 से 18 माह की आयु के बीच की जानी चाहिए।

क्लब फुट

क्लब फुट एक जन्मजात विकृति है जिसमें पैर, टखना (एंकल) और पैर के अंगूठे टेढ़े–मेढ़े होते हैं।

लक्षणः

- पैर के आगे का भाग भीतर की ओर मुड़ा होना।
- नीचे की ओर झुके हुए अंगूठे
- बच्चा बाहरी किनारे के सहारे पैर रखता है
- पैर के संचालन में कठोरता अर्थात् पैर को टांग के अगले हिस्से की ओर नहीं मोड़ा जा सकता है
- एड़ी में कड़ापन
- दोनों तलवों का आमने–सामने होना

यदि आप ऐसा कोई लक्षण देखते हैंः

- तो शिशु को जिला अस्पताल/रेफरल अस्पताल ले जाएं।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- शुरू में निदान और उपचार करना शिशु के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- यदि इसका उपचार शुरू में नहीं किया जाता है, तो इस विकृति से जीवनभर के लिए विकलांगता हो सकती है।
- इसका उपचार जन्म के समय से ही लगातार प्लास्टरिंग के जरिए (5–6 प्लास्टर कास्ट) किया जा सकता है।
- माता को शिशु के तलवे को सतह की ओर दबाकर पैर को ठीक करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

जन्मजात मोतियाबिंद

आम तौर पर नेत्र में तीन वृत्त होते हैंरू अंदरुनी वृत्त काला होता है, इसके बाद का वृत्त भूराध्हरा होता है, और बाहरी वृत्त सफेद होता है।

जन्मजात मोतियाबिंद में आंख का लैंस (अंदरुनी वृत्त) धुंधला होता है।

लक्षणः

- शिशु की आंख का अंदरुनी वृत्त काले की बजाय धूसर या सफेद रंग का है।
- आंख में अचानक तेज रोशनी पड़ने पर शिशु आंख नहीं झपकता।
- शिशु उसे गोद में लेने वाले व्यक्ति के चेहरे की ओर नहीं देखता (मां की आंख से आंख नहीं मिलाता)।

यदि आप ऐसा कोई लक्षण देखते हैंः

- तो शिशु को जिला अस्पताल/रेफरल अस्पताल ले जाएं।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- इसकी तत्काल जांच कराई जानी चाहिए, अन्यथा शिशु पूरी तरह अंधा हो सकता है।
- यदि इलाज नहीं किया गया, तो अंधता से शिशु की सीखने की योग्यता भी प्रभावित हो सकती है।

जन्मजात बहरापन

जन्म से ही मौजूद श्रृवण शक्ति की कमी को जन्मजात बहरापन कहते हैं।

लक्षणः

- बहरेपन का पारिवारिक इतिहास होय जन्म के समय पीलिया हो, जिसका इलाज करना आवश्यक होय यदि ऐसा है, तो शिशु को चिकित्सक को दिखाएं।
- शिशुतेज आवाज होने पर चौंकता/रोता/आंख न झपकता हो।
- शिशु तेज आवाज से न जागता हो।
- शिशु बात करने पर चुप न होता हो।
- कान की बाहरी बनावट में विकृति की दृष्टि से जांच करें।

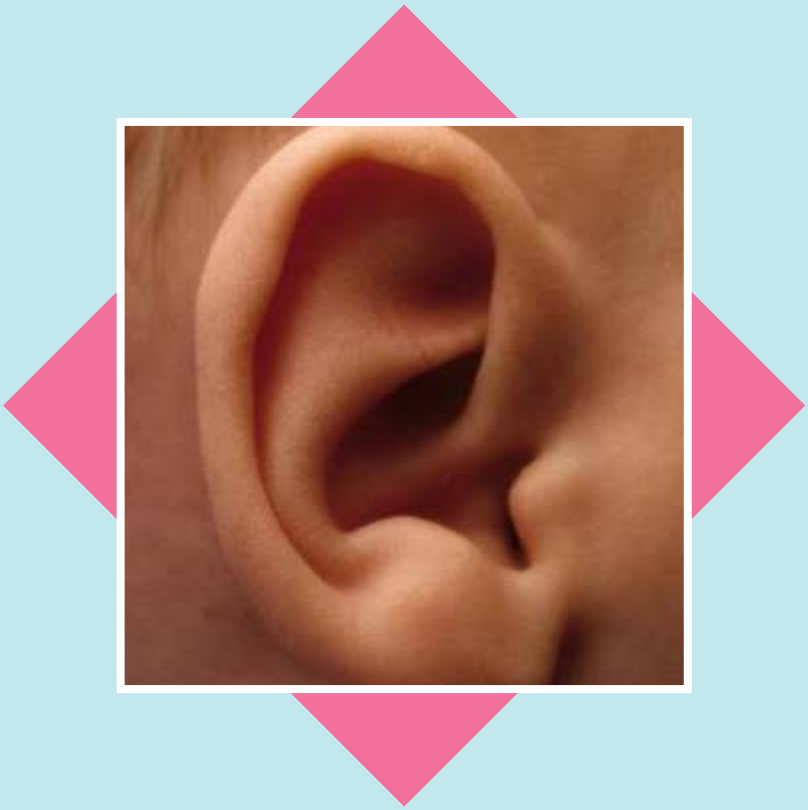

यदि आप ऐसा कोई लक्षण देखते हैंः

- तो जिला अस्पताल धनिकटतम रेफरल केन्द्र ले जाएं।

माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण संदेशः

- शिशुको जिला अस्पताल में श्रृवण शक्ति की जांच के लिए ले जाएं।
- श्रृवण शक्ति का शीघ्र उपचार करना जरूरी होता है क्योंकि इससे बोलने पर असर पड़ता है।
- शिशु को अधिक शोर वाले स्थान पर न ले जाएं।
- श्रृवण यंत्र जैसे कान की मशीन और स्पीच थेरेपी सुनने में मददगार हो सकते हैं।
- हर बच्चे के अंदर बोलने की क्षमता होतीहै। इसलिए यदि किसी बच्चे के बहरेपन के बारे में 9 महीने की उम्र पता चल जाए और 2 वर्ष की उम्र से पहले उसे सुनने का उपकरण उपलब्ध कराया जा सके तो बच्चे को गूंगा होने से रोका जा सकता है।

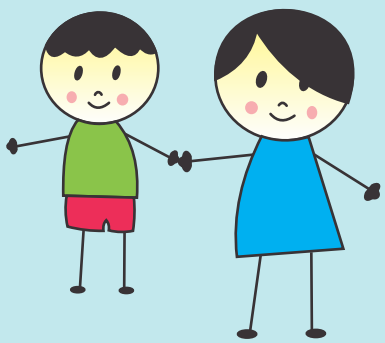

आरबीएसके के अंतर्गत बाल स्वास्थ्य जाँच एवं आरंभिक उपचार सेवाओं के लिए चयनित स्वास्थ्य दशाएँ (4डी)

जन्म से विकृति दोष

1. न्यूरल ट्यूब विकृति
2. डाउन्स सिन्ड्रोम
3. कटे होंठ एवं तालुध्केवल कटे तालु
4. टैलिप्स (क्लब फुट)
5. कूल्हे (हिप) का ठीक से विकास न होना (डिस्प्लेजिया)
6. जन्मजात मोतियाबिंद
7. जन्मजात बहरापन
8. जन्मजात हृदय रोग
9. दृष्टिपटल विकृति (समय से पहले जन्म लिए शिशुओं में आंखों के अपरिपक्व पर्दे की समस्या)

पौष्टिकता का अभाव

10. रक्ताल्पता विशेष रूप से गंभीर रक्ताल्पता
11. विटामिन ए की कमी (बाइटॉट स्पॉट)
12. विटामिन डी की कमी (रिकेट्स)
13. गंभीर कुपोषण
14. घेंघा

बाल्यावस्था के रोग

15. त्वचा के रोग (स्केबीज, फंगल संक्रमण एवं एग्जीमा)
16. ओटाइटिस मीडिया
17. रूमैटिक हृदय रोग
18. बच्चों में दमे की शिकायत
19. दंत क्षय
20. मिर्गी अथवा ऐठन विकार

विकास संबंधी देरी एवं विकलांगता

21. दृष्टि दोष
22. श्रवण दोष
23. न्यूरो–मोटर दोष
24. हाथ–पैर को चलाने में देरी
25. बोध ज्ञान में विलंब
26. देरी से बोलना
27. ऑटिज्म : आत्मकेंद्रित विकार (शुरुआत में 3 साल की उम्र से पहले आत्मकेंद्रित होना, सामाजिक संपर्क अथवा आदान–प्रदान में कमी
28. स्कूली बच्चों में नई चीजें सीखने की अक्षमता
29. ए.डी.एच.डी : स्कूल में ध्यान केंद्रित/ध्यान देने अथवा व्यवहार को नियंत्रित करने में कठिनाई एवं हमेशा अतिसक्रियता होना (अधिक गतिविधि)

30. अन्यः जन्मजात हाइपोथाइराइडिज्म, सिकल सेल एनीमिया, बीटा थैलेसीमिया (वैकलपिक)

NATIONAL HEALTH MISSION

Ministry of Health & Family Welfare
Government of India